तैत्तिरीयोपनिषद्

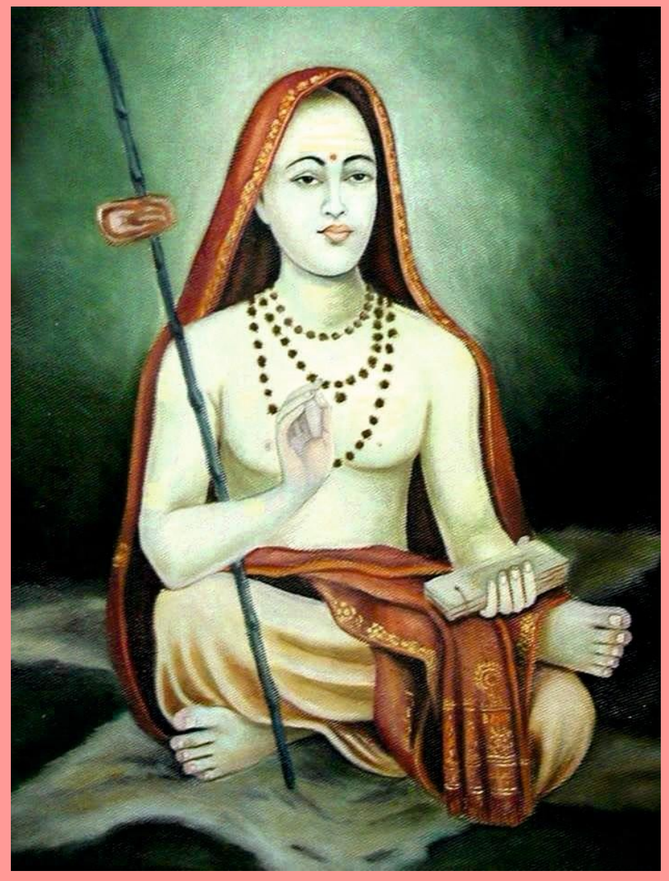

पदानुक्रम-व्युत्पत्ति-ज्ञानकोशः

तैत्तिरीयोपनिषद्

पदानुक्रम-व्युत्पत्ति-ज्ञानकोशः

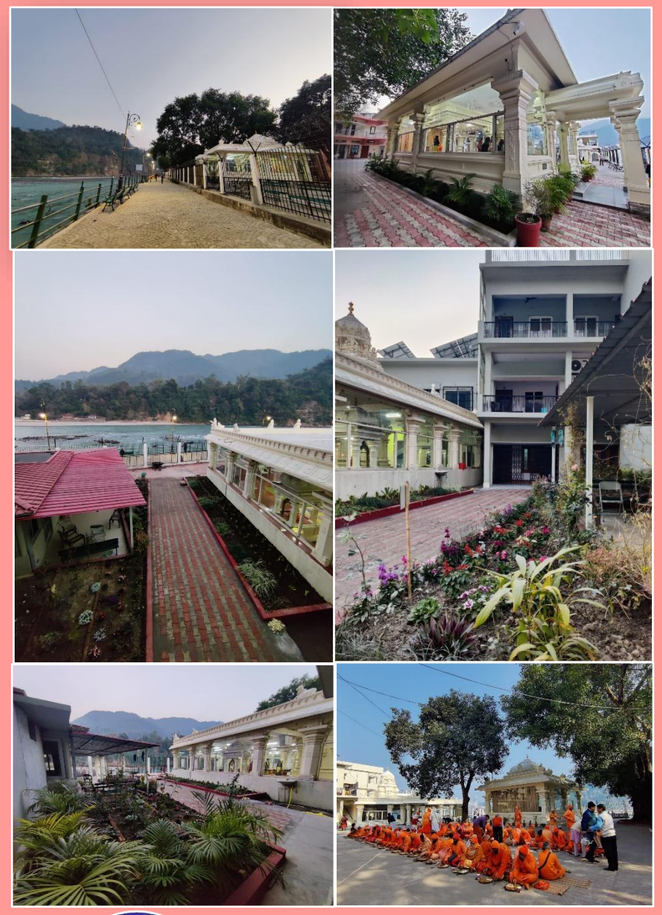

Published by
Sri Gangadhareshwar Trust
Swami Dayananda Ashram
Rishikesh, Uttarakhand - 249137

तैत्तिरीयोपनिषद्

पदानुक्रम-व्युत्पत्ति-ज्ञानकोशः

हार्दिक धन्यवाद
पूज्य स्वामी साक्षात्कृतानन्द सरस्वती
आचार्य राजेश्वर मिश्र
स्वामिनी आप्तानन्दा
स्वामिनी तत्त्वप्रियानन्दा

जिनके सहयोग से यह कार्य सिद्ध हुआ

श्रीमती वर्षा कजारिया

© 2025 by the Author

All rights reserved. No part (either whole or part) may be reproduced, copied, scanned, stored in a retrieval system, recoeded or transmitted in form or by any means including but not limited to electronic and mechanical means, without the prior written permission of the author.

Website : www.paninisutra.com

प्रथम संस्करण 2025

मूल्य - 300/-

पुस्तक उपलब्धि स्थान -

स्वामी चैतन्यानंद सरस्वती,
SRISIIM
अनुसंधान विश्वविद्यालय 7 ,संस्थागत क्षेत्र, चरण 2, वसंत कुंज,नई दिल्ली 110070
SWCHAITANYANANDAS @GMAIL.COM

स्वामी दयानन्द आश्रम
मुनि की रेती,
ऋषिकेश 249137
+ 91 98430 43607

॥ प्रेरणापत्र ॥

जीवन में दो ही आनंद हैं - ''एक है वेदांत, दूसरा है संस्कृत ।''

ऐसा मेरे गुरुजी **स्वामी प्रबुद्धानन्द जी** ने कहा था। उनसे मैंने 1992 से वेदान्त का आनन्द पूर्वक निरन्तर अध्ययन किया। क्योंकि हमारे सभी शास्त्र संस्कृत में हैं, स्वामी जी हमें संस्कृत भी सिखाते थे, परन्तु मुझे संस्कृत का बिल्कुल भी ज्ञान नहीं था। तब मैंने सोचा कि जीवन में दूसरा आनन्द भी प्राप्त करना चाहिए। पढ़ाई की कोई उम्र नहीं होती। मैंने 55 वर्ष की आयु में स्वयं के सुख के लिए संस्कृत पढ़ने की ठान ली। समाचार पत्रों में विज्ञापन दिया **लघुसिद्धान्तकौमुदी** के ज्ञाता की आवश्यकता है।

प्रभु की असीम कृपा से **आचार्य राजेश्वर मिश्र जी** मिले जो संस्कृत के पूर्ण ज्ञाता हैं। उनसे मैंने 2007 से आनन्द पूर्वक सरलता से पाणिनि के प्रत्येक सूत्रों को समझा। भगवान् श्रीकृष्ण ने साक्षात्स्वरूप से मुझे प्रेरणा दी कि मैं भगवद्गीता व उपनिषदों की धात्वर्थ-व्युत्पत्ति करूँ। तब उन सूत्रों का आधार लेकर संस्कृत प्रेमियों की सुविधा के लिए भगवद्गीता व उपनिषदों का प्रकाशन हुआ।

मेरी इष्टदेवी पहाड़ी माता की असीम अनुकम्पा से यह कार्य सिद्ध हुआ, जो आपके सामने उपस्थित है।

आशा है कि आप सब पूर्ण लाभान्वित होंगे।

धन्यवाद।
श्रीमती वर्षा कजारिया
वसंत पंचमी 2080

॥ निवेदन ॥

ब्रह्म के रहस्य को प्रकट करने वाला ज्ञान ही उपनिषद् है। जो उस परब्रह्म के समीप पहुँचकर ब्रह्मतेज से प्रकाशित होकर शांत भाव से बैठ जाता है, वही उपनिषद् है।

उपनिषदों के गूढ़ रहस्यों को उद्भासित करने के लिए उनमें प्रयुक्त पदों (शब्दों) को ठीक से समझना जानना आवश्यक है। ऋषि मुनियों ने वेद-उपनिषदादि के रक्षार्थ व्याकरणशास्त्र को ही प्रमुख बताया है, अतः व्याकरणशास्त्र के आधार पर यहाँ प्रस्तुत पुस्तक में समस्त प्रयुक्त पदों की धात्वर्थ व्युत्पत्ति अध्ययन अध्यापन के दौरान की गई है। प्रस्थानत्रयी ग्रन्थों में प्रयुक्त पद-व्युत्पत्ति करने का उद्देश्य यही है कि पाठकगण धातु, प्रत्यय, उपसर्ग आदि को पाणिनीय सूत्रों द्वारा सिद्ध किए हुए समस्त पदों के मूल यथार्थ अर्थभाव को समझ सकेंगे। पद व्युत्पत्ति में उन्हीं सूत्रों को लिया गया है जो अवान्तर से अनेक सूत्रों को बाधते हुए पदों को सिद्ध करते हैं। पुस्तक को सुसज्जित रूप देने में डॉ. पङ्कज कुमार झा ने सहयोग प्रदान किया।

विशेषकर जो ब्रह्मविद्या के जिज्ञासु हैं, शब्दों के गूढ़ार्थ पर विशेष ध्यान देते हैं, ऐसे आध्यात्मिक अध्येताओं के लिए प्रस्तुत प्रस्थानत्रयी में इस उपनिषद् की व्याकरणात्मक व्युत्पत्ति उन सभी के लिए मार्ग सूचक है। आशा है कि इससे पाठकगण को अवश्य लाभ प्राप्त होगा।

आचार्य राजेश्वर मिश्र
(राजेश्वराचार्यः संस्कृतम्)
महामन्त्री - काशीविद्वत्परिषद्
+ 918178775405

पदानां सूची

पद	वल्ली	अनुवाक	मन्त्र
अ....पृष्ठसंख्या - 1			
अकरवम्	2	9	1
अकामयत	2	6	1
अकामहतस्य	2	8	2
अभि	3	5	10
अकुरुत	2	7	1
अग्नयः	1	9	1
अग्निः	1	3	2
अग्निहोत्रम्	1	8	1
अग्नेः	2	1	1
अङ्गानि	1	5	1
अचीरम्	1	4	2
अजायत	2	7	1
अतः	1	3	1
अतप्यत	2	6	1
अतिथयः	1	9	1
अतिथिदेवः	1	11	2
अथ	1	3	1
अथर्वाङ्गिरसः	2	3	1
अथो	2	2	1
अदन्तम्	3	10	5
अदृश्ये	2	7	1
अद्यते	2	2	1
अधराहनुः	1	3	3
अधिकरणेषु	1	3	1
अधिज्यौतिषम्	1	3	2

पद	वल्ली	अनुवाक	मन्त्र
अधिप्रजम्	1	3	1
अधिभूतम्	1	7	1
अधिलोकम्	1	3	1
अधिविद्यम्	1	3	1
अधिविधाय	1	7	1
अधीहि	3	1	1
अध्यात्मम्	1	3	1
अनन्तम्	2	1	1
अनवद्यानि	1	11	2
अनात्म्ये	2	7	1
अनिरुक्तम्	2	6	1
अनिलयनम्	2	6	1
अनु	2	3	1
अनुकृतिः	1	8	1
अनुजानाति	1	8	1
अनुप्रविश्य	2	6	1
अनुप्रश्नाः	2	6	1
अनुप्राविशत्	2	6	1
अनुशासनम्	1	11	4
अनुशास्ति	1	11	1
अनुच्य	1	11	1
अन्ततः	3	10	1
अन्तरिक्षम्	1	5	1
अन्तरः	2	2	1
अन्तरम्	2	7	1
अन्तरेण	1	6	1

पदानां सूची

पद	वल्ली-अनुवाक-मन्त्र	पद	वल्ली-अनुवाक-मन्त्र
अन्तहृदये	1 6 1	अभ्युक्ता	2 1 1
अन्तेवासिनम्	1 11 1	अस्मात्	2 8 1
अन्तेवासी	1 3 3	अमुम्	2 6 1
अन्नपाने	1 4 2	अमृतः	1 6 1
अन्नम्	1 5 3	अमृतम्	1 6 2
अन्नमयम्	3 10 5	अमृतस्य	1 4 1
अन्नरसमयः	2 1 1	अमृतोक्षितः	1 10 1
अन्नवान्	3 6 1	अयम्	1 5 1
अन्नात्	2 1 1	अर्यमा	1 1 1
अन्नादः	3 6 1	अलूक्षाः	1 11 4
अन्नेन	1 5 3	अवतु	1 1 1
अन्तरसमयात्	2 2 1	अवलम्बते	1 6 1
अन्यः	2 2 1	अविज्ञानम्	2 6 1
अन्याः	1 5 1	अवादिषम्	1 12 1
अन्यात्	2 7 1	अवान्तरदिशः	1 7 1
अपानः	1 5 3	अवोचत्	1 7 1
अपि	1 8 1	अश्रुता	2 6 1
अपियन्ति	2 8 3	अश्नुते	2 1 1
अप्राप्य	2 4 1	अश्रद्धया	1 11 3
अप्रियाः	3 10 3	असत्	2 6 1
अप्सु	3 8 1	असानि	1 4 3
अभवत्	2 6 1	असि	1 1 1
अभयम्	2 7 1	असृजत्	2 6 1
अभिसंविशन्ति	3 1 1	असौ	1 5 1
अभ्यभवाम्	3 10 5	अस्ति	2 6 1
अभ्याख्यातेषु	1 11 4	अस्थि	1 7 1

पदानां सूची

पद	वल्ली-अनुवाक-मन्त्र	पद	वल्ली-अनुवाक-मन्त्र
अस्मच्छ्रेयांशः	1 11 3	आनन्दस्य	2 8 1
अस्माकम्	1 11 2	आनन्दा	2 8 1
अस्मि	1 10 1	आनन्दात्	3 6 1
अस्मै	1 5 3	आनन्दी	2 7 1
अहम्	1 4 3	आपः	1 3 2
अहर्जरम्	1 4 3	आप्नुवन्ति	2 2 1
आ....पृष्ठसंख्या - 34		आप्नोति	1 6 2
आकाशः	1 3 1	आमायन्तु	1 4 2
आकाशशरीरम्	1 6 2	आयुः	2 3 1
आकाशात्	2 1 1	आयुक्ताः	1 11 4
आकाशे	3 9 1	आराद्धि	3 10 1
आचक्षते	1 3 1	आवहन्ति	1 5 3
आचार्य	1 3 2	आवहन्ती	1 4 1
आचार्यदेव	1 11 2	आवाः	3 10 5
आचार्याय	1 11 1	आवीत्	1 12 1
आजानजानाम्	2 8 2	आशिष्टः	2 8 1
आत्मन	1 4 2	आश्रावयन्ति	1 8 1
आत्मा	1 5 1	आसनेन	1 11 3
आत्मानम्	2 7 1	आसीत्	2 7 1
आदित्य	1 3 2	आस्ते	3 10 5
आदित्ये	1 6 2	आह	1 8 1
आदेश	1 11 4	आहृत्य	1 11 1
आनन्द	2 5 1	आहो	2 6 1
आनन्दम्	1 6 2		
आनन्दमयम्	2 8 5		
आनन्दयाति	2 7 1		

Want to read more?

Get full access by purchasing
the complete book.